Imperative to adopt sustainable lifestyles to achieve 2030 development: TERI

Updated: Apr 26 2023 9:05PM

New Delhi, Apr 26 (PTI) The global discourse need to "recognise, integrate and mainstream" the imperative of adopting sustainable lifestyles to achieve the 2030 development agenda, the director general of TERI said on Wednesday.

Speaking at a sustainability conclave organised by Bharat Soka Gakkai, an organisation that promotes peace, culture, education and sustainability across the Indian society, Dr Vibha Dhawan said living with less and accepting the co-existence of everyone is key to achieving Sustainable Development Goals for 2030, also known as SDG30. "The imperative of adopting sustainable lifestyles to achieve most of the development targets had never been so critical in the past and global discourse needs to recognise, integrate and mainstream them for achieving the 2030 development agenda," the director general of The Energy and Resources Institute (TERI) said. Chairperson of Bharat Soka Gakkai, Vishesh Gupta said the basic definition of sustainability refers to "meeting the needs of the present generation without compromising the ability of future generations to meet their own needs." "To achieve this goal, a fundamental reassessment of our way of existence as individuals, as societies, and as a human civilisation is required. Towards that end, we must take concrete action in our everyday life. And for this purpose, adopting sustainable human behaviour as a way of life will be crucial," he added. Bharat Soka Gakkai launched a carbon footprint calculator on the occasion to give means to individuals to measure what impact they are making on the environment. PTI UZM.

India

Imperative to adopt sustainable lifestyles to achieve 2030 development: TERI

PTI 26 April, 2023

New Delhi, Apr 26 (PTI) The global discourse need to "recognise, integrate and mainstream" the imperative of adopting sustainable lifestyles to achieve the 2030 development agenda, the director general of TERI said on Wednesday.

Speaking at a sustainability conclave organised by Bharat Soka Gakkai, an organisation that promotes peace, culture, education and sustainability across the Indian society, Dr Vibha Dhawan said living with less and accepting the co-existence of everyone is key to achieving Sustainable Development Goals for 2030, also known as SDG30.

"The imperative of adopting sustainable lifestyles to achieve most of the development targets had never been so critical in the past and global discourse needs to recognise, integrate and mainstream them for achieving the 2030 development agenda," the director general of The Energy and Resources Institute (TERI) said.

Chairperson of Bharat Soka Gakkai, Vishesh Gupta said the basic definition of sustainability refers to "meeting the needs of the present generation without compromising the ability of future generations to meet their own needs." "To achieve this goal, a fundamental reassessment of our way of existence as individuals, as societies, and as a human civilisation is required. Towards that end, we must take concrete action in our everyday life. And for this purpose, adopting sustainable hum behaviour as a way of life will be crucial," he added.

Bharat Soka Gakkai launched a carbon footprint calculator on the occasion to give means to individuals to measure what impact they are making on the environment. PTI UZM RDT

This report is auto-generated from PTI news service. ThePrint holds no responsibility for its content.

TAGS PTI wire

RELATED ARTICLES

Delhi govt to introduce art-based learning at childcare centres to help...

PTI 26 April, 2023

#National

Imperative to adopt sustainable lifestyles to achieve 2030 development: TERI

NewsDrum Desk

26 Apr 2023

New Delhi, Apr 26 (PTI) The global discourse need to "recognise, integrate and mainstream" the imperative of adopting sustainable lifestyles to achieve the 2030 development agenda, the director general of TERI said on Wednesday.

Speaking at a sustainability conclave organised by Bharat Soka Gakkai, an organisation that promotes peace, culture, education and sustainability across the Indian society, Dr Vibha Dhawan said living with less and accepting the co-existence of everyone is key to achieving Sustainable Development Goals for 2030, also known as SDG30.

"The imperative of adopting sustainable lifestyles to achieve most of the development targets had never been so critical in the past and global discourse needs to recognise, integrate and mainstream them for achieving the 2030 development agenda," the director general of The Energy and Resources Institute (TERI) said.

Chairperson of Bharat Soka Gakkai, Vishesh Gupta said the basic definition of sustainability refers to "meeting the needs of the present generation without compromising the ability of future generations to meet their own needs." "To achieve this goal, a fundamental reassessment of our way of existence as individuals, as societies, and as a human civilisation is required. Towards that end, we must take concrete action in our everyday life. And for this purpose, adopting sustainable human behaviour as a way of life will be crucial," he added.

Bharat Soka Gakkai launched a carbon footprint calculator on the occasion to give means to individuals to measure what impact they are making on the environment. PTI UZM RDT

ऑडियो डाउनलोड होने का इंतज़ार करें...

धरती का वजूद बचाने के लिए जीवनशैली बदलने का आह्वान

■ विस, नई दिल्ली: बढ़ता तापमान, बदलती जलवायु, प्लास्टिक और वायु प्रदूषण... दुनिया खतरे में है और ऐसे में हर शख्स को सोचना होगा कि हम पृथ्वी को संरक्षित करने में क्या भूमिका निभा सकते हैं! इस फिक्र के साथ भारत सोका गक्कई संस्था ने बुधवार को 'सस्टेनेबिलिटी कॉन्क्लेव' रखा। चिन्मय मिशन ऑडिटोरियम में हुई इस संगोष्ठी में विशेषज्ञों ने बताया कि पर्यावरण से जुड़ी कई चुनौतियों के बीच कैसे हम अपनी पृथ्वी को बचा सकते हैं। भारत सोका गक्कई के इस कॉन्क्लेव में भविष्य की चुनौतियों और अवसरों पर चर्चा के लिए कई विचारक और विशेषज्ञ शामिल हुए। भारत सोका गक्कई के चेयरपर्सन विशेष गुप्ता ने कहा कि स्थिरता की मूल परिभाषा है आने वाली पीढ़ियों की जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करना। इस गोल को पाने करने के लिए जरूरी है कि हम अपनी रोजमर्रा की जीवनशैली का फिर से मूल्यांकन करें। टेरी (द एनर्जी एंड रिसोर्सेज इंस्टिट्यूट) की डायरेक्टर जनरल डॉ. विभा धवन ने कहा, विकास के अधिकांश लक्ष्यों को पाने करने के लिए स्थायी जीवन शैली को अपनाने की अनिवार्यता इतनी महत्वपूर्ण कभी नहीं थी।

इंडियन स्कूल ऑफ डिवेलपमेंट मैनेजमेंट के को-फाउंडर और डायरेक्टर गौरव शाह ने कहा, हम प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध इस्तेमाल कर उन्हें लगातार कम करते जा रहे हैं। हमें जीवन शैली में बदलाव लाने चाहिए। छोटी-छोटी चीजें भी कार्बन फुटप्रिंट को कम करने में मायने रखती हैं।

भारत सोका गक्कई के 'सस्टेनेबिलिटी कॉन्क्लेव' में आने वाली पीढ़ी की चुनौतियों पर चर्चा

एत्री इन्फेंट मैटर्स की को-फाउंडर और प्रेजिडेंट डॉ. राधिका बत्रा ने कहा कि पैरेंट्स और टीचर्स भी बच्चों को पृथ्वी के लिए काम करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। सूरज, हवा, पानी जैसे प्राकृतिक उपहारों का इस्तेमाल करते समय हमारा संकल्प होना चाहिए कि हम पृथ्वी को नुकसान नहीं पहुंचाएंगे। विजन स्प्रिंग इंडिया के एमडी और बोर्ड मेंबर अंशु तनेजा ने कहा कि अगर हम अपने तौर-तरीके नहीं बदलते हैं, बड़े कदम नहीं उठाते हैं, तो हम अगली पीढ़ी के लिए अस्तित्व का खतरा छोड़कर जा रहे हैं। इस अवसर पर भारत सोका गक्कई ने कार्बन फुटप्रिंट कैलकुलेटर भी लॉन्च किया, जिसे 'बीएसजी फॉर एसडीजी' मोबाइल ऐप से डाउनलोड किया जा सकता है। संस्था ने 'सीड्स ऑफ होप एंड एक्शन' सस्टेनेबिलिटी एग्जिबिशन भी लॉन्च की। भारत सोका गक्कई (बीएसजी) शांति, संस्कृति, शिक्षा और सतत विकास से जुड़ी विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करता है।

HIMACHAL LIFESTYLE NATIONAL SHIMLA

भारत सोका गाक्काई सतत एवं स्थायी विकास संगोष्ठी, 2030 के लिए टिकाऊ एवं स्थिर जीवन शैली अनिवार्य :डॉ धवन

By नवीन भारत न्यूज़

APR 26, 2023

Spread the love

भारत सोका गाक्काई सतत एवं स्थायी विकास संगोष्ठी
बी एस जी संगोष्ठी में टेरी प्रमुख डॉ धवन ने कहा कि 2030 के लिए टिकाऊ एवं स्थिर जीवन शैली अनिवार्य है
सतत मानव व्यवहार के माध्यम से उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अग्रसर होना
नई दिल्ली , 26 अप्रैल 2023 आज स्थायी एवं टिकाऊ जीवन की आवश्यकता पहले की अपेक्षा और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गयी है। जलवायु परिवर्तन, बढ़ते तापमान,प्लास्टिक और वायु प्रदुषण के कारण दुनिया में अनेक समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। ऐसे समय हम सभी को सोचना होगा कि हममें से प्रत्येक

Search

Search

Recent Posts

भारत सोका गाक्काई सतत एवं स्थायी विकास संगोष्ठी, 2030 के लिए टिकाऊ एवं स्थिर जीवन शैली अनिवार्य :डॉ धवन

कांग्रेस ने की गारंटियों से तौबा : बिंदल

विद्यार्थियों के कौशल विकास पर दें विशेष ध्यान: शुक्ल

एचपी शिवा परियोजना के तहत 15 हजार बागवान परिवार होंगे लाभान्वित

स्वास्थ्य मंत्री ने एडवांटेज हेल्थकेयर इंडिया के छठे संस्करण में भाग लिया

Recent Comments

No comments to show.

Archives

April 2023

March 2023

February 2023

व्यक्ति अपने इस अनमोल गृह, पृथ्वी को संरक्षित करने में क्या भूमिका निभा सकता है।
भारतीय समाज में शांति ,संस्कृति,शिक्षा और सतत एवं स्थायी विकास को बढ़ावा देने वाली संस्था भारत सोका गाक्काई ने इस मुद्दे पर चर्चा करने के लिए 26 अप्रैल,2023 को सतत एवं स्थायी विकास संगोष्ठी का आयोजन किया। नई दिल्ली में चिन्मय मिशन ऑडिटोरियम में आयोजित इस संगोष्ठी में स्थायी भविष्य बनाने के लिए चुनौतियों और अवसरों का पता लगाने के लिए कई विचारको,विशेषज्ञों और स्थिरता के प्रति समर्पित लोगों ने भाग लिया।
संगोष्ठी का विषय था,' स्थायी एवं सतत मानव व्यवहार द्वारा उद्देश्य प्राप्ति के लिए अग्रसर होना' टिकाऊ विकास के लिए स्थायी एवं सतत मानव व्यवहार, भारत सोका गाक्काई की परिकल्पना है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य सतत मानव व्यवहार की आवश्यकता पर बल देना तथा यह जागरूकता उत्पन्न करना था कि टिकाऊ विकास की चर्चाओ को धरातल पर ठोस रुप में परिणित करने का यही एक मात्र तरीका है। यह बदलाव हमें समस्त जीवो के अस्तित्व का सम्मान और पृथ्वी के सभी संसाधनों को संरक्षित करने के लिए प्रेरित करता है।
इस विषय का परिचय देते हुए भारत सोका गाक्काई के अध्यक्ष विशेष गुप्ता ने "कहा स्थिरता की मूल परिभाषा का अर्थ है-भविष्य की पीढीयों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किये बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करना" इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि हम व्यक्तिगत तौर पर, सामाजिक दृष्टि से तथा मानव सभ्यता के रुप में अपने अस्तित्व के तौर-तरीके का मौलिक पुर्नमूल्यांकन करे| इसके लिए हमें अपने दैनिक जीवन व्यवहार में इसे जीवन शैली के रुप में अपनाना होगा।
इस संगोष्ठी में प्रसिद्ध वक्ता जैसे डॉ० विभा धवन, महानिदेशक, द एनर्जी एंड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट; डॉ. राधिका बत्रा, सह-संस्थापक और अध्यक्ष,एव्री इंफेंट मैटर्स; श्री अंशु तनेजा, प्रबंध निदेशक और बोर्ड सदस्य, विज़नस्प्रिंग, भारत; और श्री गौरव शाह, सह-संस्थापक और निदेशक, इंडियन स्कूल ऑफ डेवलपमेंट मैनेजमेंट ने भाग लिया।
वक्ताओं ने विषय पर अपनी विशेषज्ञता और दृष्टिकोण साझा किए और स्थिरता की संस्कृति बनाने के लिए सामूहिक कार्रवाई की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति द्वारा अपनी जीवन शैली में बदलाव लाने के महत्व पर प्रकाश डाला।
इस संगोष्ठी की मुख्य वक्ता डॉ० विभा धवन ने कहा: "अधिकांश विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए स्थायी जीवन शैली को अपनाने की अनिवार्यता इतनी महत्वपूर्ण कभी नहीं थी। 2030 के विकास के एजंडे को प्राप्त करने के लिए हमें वैश्विक संवाद द्वारा ऐसी शैलियों को पहचानने, एकीकृत करने और उन्हें मुख्यधारा में लाने की आवश्यकता है।"
श्री गौरव शाह ने अपने वक्तव्य में कहा, "आज , हम पृथ्वी पर उपलब्ध प्राक्रतिक संसाधनों का अंधाधुंध उपयोग करके उन्हें लगातार कम करते जा रहे हैं। हमें अपनी जीवन शैली में आवश्यक परिवर्तन लाने चाहिये ताकि हमारी अगामी पीढ़ी को भी वही अवसर और अधिकार मिल सकें,जो हमें हमारे पूर्वजो से विरासत में मिले थे
डॉ. राधिका बत्रा ने प्रकृति के उपहारों का उपयोग करने पर बल दिया । उन्होंने कहा " प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का एक मिशन होता है और उसे प्राप्त करने का माध्यम भी अलग होता है । लेकिन हम सब में एक चीज़ समान होनी चाहिये और वह है, सूर्य, हवा, बारिश जैसे प्राक्रतिक उपहारों का उपयोग करते समय यह संकल्प की हम धरती माता को संरक्षित रखेंगे तथा उसे कभी हानी नही पहुंचायेंगे"
श्री अंशु तनेजा ने स्थायी मानव व्यवहार को केवल सामाजिक प्रभाव पैदा करने के साधन के बजाय स्वार्थ के लेंस से देखने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि यदि हम अपने तौर-तरीके नहीं बदलते हैं तथा बड़े कदम नही उठाते है, तो हम अपने जीवन की गुणवत्ता को गंभीर रूप से प्रभावित करने का जोखिम उठा रहे हैं और अगली पीढ़ी के लिए एक अस्तित्वगत खतरा पीछे छोड़कर जा रहे हैं। उन्होंने कहा, "हमारा यह ग्रह अपने आप को बचाने में सक्षम है, आवश्यकता है हमें खुद को बचाने की"
वक्ताओं के गहन विचारों और चर्चाओं ने एक सार्थक संवाद को जन्म दिया,जिसने क्षोताओं को स्थायी जीवन शैलियों को अपनाने और ग्रह पर सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए प्रेरित किया। यह आयोजन लोगों की मानसिकता और व्यवहार में बदलाव को उजागर करके एक स्थायी भविष्य के लिए जागरूकता पैदा करने और इस दिशा में काम करने को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था।
भारत सोका गाक्काई ने इस अवसर पर एक कार्बन फुटप्रिंट कैलकुलेटर भी लॉन्च किया, जो लोगों को पर्यावरण पर उनके द्वारा डाले जा रहे प्रभाव को मापने में सहायता देगा। इसे 'गूगल प्ले स्टोर' या 'एप्पल ऐप स्टोर' से "बी एस जी फॉर एस डी जी " नामक मोबाइल ऐप के रूप में डाउनलोड किया जा सकता है।
बी एस जी ने 'सीड्स ऑफ़ होप एंड एक्शन: मेकिंग द एस डी जी ए रियलिटी' नामक शीर्षक से एक सस्टेनेबिलिटी प्रदर्शनी भी लॉन्च की।इस प्रदर्शनी में एक अधिक टिकाऊ विश्व के सृजन तथा एक व्यक्ति की क्षमता की भूमिका तथा स्थायी एवं सतत मानव व्यवहार को अपनाने के प्रभाव को दर्शाया गया है।
बी० एस० जी० की अधिक जानकारी के लिए कृपया देखें:

January 2023
December 2022
November 2022
October 2022
September 2022
August 2022
July 2022
June 2022
May 2022

Categories

Crime
Education
Himachal
Lifestyle
National
Politics
Religious
Shimla
Special Feature English / Hindi
Sports

Home

भारत सोका गाक्काई (बीएसजी) सभी के लिए खुशी और शांति के मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए समर्पित एक संस्था है। बीएसजी शांति ,संस्कृति,शिक्षा और सतत एवं स्थायी विकास से सम्बंधित विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करता है। इन गतिविधियों का उद्देश्य है, ' व्यक्ति सशक्तिकरण' द्वारा भारत में एक 'नये युग' का निर्माण करना ,जहाँ सभी प्रकार के जीवन की गरिमा को सम्मान मिले। बीएसजी में सभी आयु वर्ग के 275000 से अधिक स्वैछिक सदस्य है , जो भारत के 600 कस्बों और शहरों में रहते है। 2030 तक एक स्थायी युग का निर्माण करने के लिए, बी एस जी ने 2021 में ' एस डी जी के लिए बी एस जी ' पहल की शुरुआत की, जिसका आदर्श वाक्य है: '2030 की ओर: सतत एवं स्थायी मानव व्यवहार के माध्यम से एस डी जी को प्राप्त करना।इस पहल के तहत बी एस जी कई गतिविधियों को चला रहा है। इन गतिविधियों द्वारा बी एस जी स्थिरता की संस्कृति के निर्माण में आम आदमी की भूमिका के प्रति जागरूकता फ़ैलाने का काम करके एक ऐसे विश्व का निर्माण कर रहा है जिसमे कोई भी पीछे न छुट जाये।

एस डी जी के लिए बी० एस० जी०:
https://www.bsgforsdg.org/about-bsg-for-sdg
अधिक जानकारी के लिए
भारत सोका गाक्काई (भारत) जनसंपर्क
राहुल जैन: +91 9810173231, rahul.co.in@gmail.com
वी.के. कालरा: +91 9810232274, vkkalra@gmail.com
सीमा मुखर्जी seemamukherjee66@gmail.com

कांग्रेस ने की गारंटियों से तौबा : बिंदल »

By नवीन भारत न्यूज़

RELATED POST

HIMACHAL SHIMLA
कांग्रेस ने की गारंटियों से तौ...
APR 26, 2023 नवीन भारत न्यूज़

HIMACHAL SHIMLA
विद्यार्थियों के कौशल विकास...
APR 26, 2023 नवीन भारत न्यूज़

HIMACHAL SHIMLA
एचपी शिवा परियोजना के...
APR 26, 2023 नवीन भारत न्यूज़

Leave a Reply

Enter your comment here...

ADVERTISEMENT

Imperative to adopt sustainable lifestyles to achieve 2030 development: TERI

The global discourse need to recognise, integrate and mainstream the imperative of adopting sustainable lifestyles to achieve the 2030 development agenda, the director general of TERI said on Wednesday.Speaking at a sustainability conclave organised by Bharat Soka Gakkai, an organisation that promotes peace, culture, education and sustainability across the Indian society, Dr Vibha Dhawan said living with less and accepting the co-existence of everyone is key to achieving Sustainable Development Goals for 2030, also known as SDG30.

Urban Development

PTI| New Delhi | India

Updated: 26-04-2023 21:06 IST | Created: 26-04-2023 20:50 IST

Image Credit: Twitter(@teriin)

The global discourse need to ''recognise, integrate and mainstream'' the

Speaking at a sustainability conclave organised by Bharat Soka Gakkai, an organisation that promotes peace, culture, education and sustainability across the Indian society, Dr Vibha Dhawan said living with less and accepting the co-existence of everyone is key to achieving Sustainable Development Goals for 2030, also known as SDG30. ''The imperative of adopting sustainable lifestyles to achieve most of the development targets had never been so critical in the past and global discourse needs to recognise, integrate and mainstream them for achieving the 2030 development agenda,'' the director general of The Energy and Resources Institute (TERI) said. Chairperson of Bharat Soka Gakkai, Vishesh Gupta said the basic definition of sustainability refers to ''meeting the needs of the present generation without compromising the ability of future generations to meet their own needs.'' ''To achieve this goal, a fundamental reassessment of our way of existence as individuals, as societies, and as a human civilisation is required. Towards that end, we must take concrete action in our everyday life. And for this purpose, adopting sustainable human behaviour as a way of life will be crucial,'' he added. Bharat Soka Gakkai launched a carbon footprint calculator on the occasion to give means to individuals to measure what impact they are making on the environment.

(This story has not been edited by Devdiscourse staff and is auto-generated from a syndicated feed.)

READ MORE ON

Vibha Dhawan Bharat Soka Gakkai Vishesh Gupta Soka Gakkai

The Energy and Resources Institute Indian Sustainable Development Goals TERI

ADVERTISEMENT

READ MORE

- PM Modi to embark on two-day visit to 2 states, UTs today

भारत सोका गाक्काई सतत एवं स्थायी विकास संगोष्ठी; डॉ. धवन ने कहा- 2030 के लिए टिकाऊ एवं स्थिर जीवन शैली अनिवार्य

मीना कौंडल : 5-6 minutes

सतत मानव व्यवहार के माध्यम से उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अग्रसर होना

नई दिल्ली: स्थायी एवं टिकाऊ जीवन की आवश्यकता पहले की अपेक्षा आज और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गयी है। जलवायु परिवर्तन, बढ़ते तापमान,प्लास्टिक और वायु प्रदुषण के कारण दुनिया में अनेक समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। ऐसे समय हम सभी को सोचना होगा कि हममें से प्रत्येक व्यक्ति अपने इस अनमोल गृह, पृथ्वी को संरक्षित करने में क्या भूमिका निभा सकता है।

भारतीय समाज में शांति ,संस्कृति,शिक्षा और सतत एवं स्थायी विकास को बढ़ावा देने वाली संस्था भारत सोका गाक्काई ने इस मुद्दे पर चर्चा करने के लिए 26 अप्रैल को सतत एवं स्थायी विकास संगोष्ठी का आयोजन किया। नई दिल्ली में चिन्मय मिशन ऑडिटोरियम में आयोजित इस संगोष्ठी में स्थायी भविष्य बनाने के लिए चुनौतियों और अवसरों का पता लगाने के लिए कई विचारको,विशेषज्ञों और स्थिरता के प्रति समर्पित लोगों ने भाग लिया।

संगोष्ठी का विषय था,' स्थायी एवं सतत मानव व्यवहार द्वारा उद्देश्य प्राप्ति के लिए अग्रसर होना' टिकाऊ विकास के लिए स्थायी एवं सतत मानव व्यवहार, भारत सोका गाक्काई की परिकल्पना है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य सतत मानव व्यवहार की आवश्यकता पर बल देना तथा यह जागरूकता उत्पन्न करना था कि टिकाऊ विकास की चर्चाओ को धरातल पर ठोस रुप में परिणित करने का यही एक मात्र तरीका है। यह बदलाव हमें समस्त जीवो के अस्तित्व का सम्मान और पृथ्वी के सभी संसाधनों को संरक्षित करने के लिए प्रेरित करता है।

इस विषय का परिचय देते हुए भारत सोका गाक्काई के अध्यक्ष विशेष गुप्ता ने "कहा स्थिरता की मूल परिभाषा का अर्थ है-भविष्य की पीढीयों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किये बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करना" इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि हम व्यक्तिगत तौर पर, सामाजिक दृष्टि से तथा मानव सभ्यता के रुप में अपने अस्तित्व के तौर-तरीके का मौलिक पुर्नमूल्यांकन करे| इसके लिए हमें अपने दैनिक जीवन व्यवहार में इसे जीवन शैली के रुप में अपनाना होगा।

इस संगोष्ठी में प्रसिद्ध वक्ता जैसे डॉ० विभा धवन, महानिदेशक, द एनर्जी एंड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट; डॉ. राधिका बत्रा, सह-संस्थापक और अध्यक्ष,एव्री इंफेंट मैटर्स; अंशु तनेजा, प्रबंध निदेशक और बोर्ड सदस्य, विज़नस्प्रिंग, भारत; और गौरव शाह, सह-संस्थापक और निदेशक, इंडियन स्कूल ऑफ डेवलपमेंट मैनेजमेंट ने भाग लिया।

वक्ताओं ने विषय पर अपनी विशेषज्ञता और दृष्टिकोण साझा किए और स्थिरता की संस्कृति बनाने के लिए सामूहिक कार्रवाई की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति द्वारा अपनी जीवन शैली में बदलाव लाने के महत्व पर प्रकाश डाला।

इस संगोष्ठी की मुख्य वक्ता डॉ. विभा धवन ने कहा: "अधिकांश विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए स्थायी जीवन शैली को अपनाने की अनिवार्यता इतनी महत्वपूर्ण कभी नहीं थी। 2030 के विकास के

एजंडे को प्राप्त करने के लिए हमें वैश्विक संवाद द्वारा ऐसी शैलियों को पहचानने, एकीकृत करने और उन्हें मुख्यधारा में लाने की आवश्यकता है।"

गौरव शाह ने अपने वक्तव्य में कहा, "आज , हम पृथ्वी पर उपलब्ध प्राक्रतिक संसाधनों का अंधाधुंध उपयोग करके उन्हें लगातार कम करते जा रहे हैं। हमें अपनी जीवन शैली में आवश्यक परिवर्तन लाने चाहिये ताकि हमारी अगामी पीढ़ी को भी वही अवसर और अधिकार मिल सकें,जो हमें हमारे पूर्वजो से विरासत में मिले थे ।"

डॉ. राधिका बत्रा ने प्रकृति के उपहारों का उपयोग करने पर बल दिया । उन्होंने कहा " प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का एक मिशन होता है और उसे प्राप्त करने का माध्यम भी अलग होता है । लेकिन हम सब में एक चीज़ समान होनी चाहिये और वह है, सूर्य, हवा, बारिश जैसे प्राक्रतिक उपहारों का उपयोग करते समय यह संकल्प की हम धरती माता को संरक्षित रखेंगे तथा उसे कभी हानी नही पहुंचायेंगे"

अंशु तनेजा ने स्थायी मानव व्यवहार को केवल सामाजिक प्रभाव पैदा करने के साधन के बजाय स्वार्थ के लेंस से देखने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि यदि हम अपने तौर-तरीके नहीं बदलते हैं तथा बड़े कदम नही उठाते है, तो हम अपने जीवन की गुणवत्ता को गंभीर रूप से प्रभावित करने का जोखिम उठा रहे हैं और अगली पीढ़ी के लिए एक अस्तित्वगत खतरा पीछे छोड़कर जा रहे हैं। उन्होंने कहा, "हमारा यह ग्रह अपने आप को बचाने में सक्षम है, आवश्यकता है हमें खुद को बचाने की"

वक्ताओं के गहन विचारों और चर्चाओं ने एक सार्थक संवाद को जन्म दिया,जिसने क्षोताओं को स्थायी जीवन शैलियों को अपनाने और ग्रह पर सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए प्रेरित किया। यह आयोजन लोगों की मानसिकता और व्यवहार में बदलाव को उजागर करके एक स्थायी भविष्य के लिए जागरूकता पैदा करने और इस दिशा में काम करने को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था।

भारत सोका गाक्काई ने इस अवसर पर एक कार्बन फुटप्रिंट कैलकुलेटर भी लॉन्च किया, जो लोगों को पर्यावरण पर उनके द्वारा डाले जा रहे प्रभाव को मापने में सहायता देगा। इसे 'गूगल प्ले स्टोर' या 'एप्पल ऐप स्टोर' से "बी एस जी फॉर एस डी जी " नामक मोबाइल ऐप के रूप में डाउनलोड किया जा सकता है। बी एस जी ने 'सीड्स ऑफ़ होप एंड एक्शन: मेकिंग द एस डी जी ए रियलिटी' नामक शीर्षक से एक सस्टेनेबिलिटी प्रदर्शनी भी लॉन्च की।इस प्रदर्शनी में एक अधिक टिकाऊ विश्व के सृजन तथा एक व्यक्ति की क्षमता की भूमिका तथा स्थायी एवं सतत मानव व्यवहार को अपनाने के प्रभाव को दर्शाया गया है।

देश विशेष

भारत सोका गाक्काई ने दिल्ली में शांति और स्थिरता संगोष्ठी का आयोजन किया ; 2030 के लिए टिकाऊ एवं स्थिर जीवन शैली अनिवार्य

By shrikhand times

APR 26, 2023 #New Delhi #

Spread the love

भारत सोका गाक्काई सतत एवं स्थायी विकास संगोष्ठी
बी एस जी संगोष्ठी में टेरी प्रमुख डॉ धवन ने कहा कि 2030 के लिए टिकाऊ एवं स्थिर जीवन शैली अनिवार्य है
सतत मानव व्यवहार के माध्यम से उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अग्रसर होना
नई दिल्ली , 26 अप्रैल 2023 आज स्थायी एवं टिकाऊ जीवन की आवश्यकता पहले की अपेक्षा और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गयी है। जलवायु परिवर्तन, बढ़ते तापमान,प्लास्टिक और वायु प्रदुषण के कारण दुनिया में अनेक समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। ऐसे समय हम सभी को सोचना होगा कि हममें से प्रत्येक व्यक्ति अपने इस अनमोल गृह, पृथ्वी को संरक्षित करने में क्या भूमिका निभा सकता है।
भारतीय समाज में शांति ,संस्कृति,शिक्षा और सतत एवं स्थायी विकास को बढ़ावा देने वाली संस्था भारत

RECENT POSTS

आउटसोर्स पर कर्मचारियों को रखने वाली कंपनियों के खिलाफ विजिलेंस की जांच शुरू

सुप्रीम कोर्ट से पीटीए शिक्षकों को बड़ी राहत, 1 अप्रैल, 2018 से मिलेगा नियमितीकरण का लाभ

शिमला IGMC बिल्डिंग में लगी आग,आग लगने की सूचना पर पहुंचा दमकल विभाग

JOA (IT) Paper leak : मुख्य आरोपी उमा की भांजी और दलाल की पत्नी चार दिन की पुलिस रिमांड पर

धर्मशाला में JBT बैचवाइज भर्ती में बीएड अभ्यर्थियों को शामिल करने पर जेबीटी प्रशिक्षु उग्र, रोष रैली निकाली

शिमला में 01 से 04 जून तक होगा अंतर्राष्ट्रीय शिमला ग्रीष्मोत्सव 2023 – आदित्य नेगी

कुल्लू पुलिस के हाथ लगी बड़ी सफलता, 4 किलोग्राम चरस के साथ दबोचा तस्कर

मुख्यमंत्री और उप-मुख्यमंत्री ने 11 जवानों के निधन पर शोक व्यक्त किया

मुख्यमंत्री ने राज्य हस्तशिल्प एवं हथकरघा निगम लिमिटेड का लोगो जारी किया

भारत सोका गाक्काई ने दिल्ली में शांति और स्थिरता संगोष्ठी का आयोजन किया ;

सोका गाक्काई ने इस मुद्दे पर चर्चा करने के लिए 26 अप्रैल,2023 को सतत एवं स्थायी विकास संगोष्ठी का आयोजन किया। नई दिल्ली में चिन्मय मिशन ऑडिटोरियम में आयोजित इस संगोष्ठी में स्थायी भविष्य बनाने के लिए चुनौतियों और अवसरों का पता लगाने के लिए कई विचारको,विशेषज्ञों और स्थिरता के प्रति समर्पित लोगों ने भाग लिया।

संगोष्ठी का विषय था,' स्थायी एवं सतत मानव व्यवहार द्वारा उद्देश्य प्राप्ति के लिए अग्रसर होना' टिकाऊ विकास के लिए स्थायी एवं सतत मानव व्यवहार, भारत सोका गाक्काई की परिकल्पना है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य सतत मानव व्यवहार की आवश्यकता पर बल देना तथा यह जागरूकता उत्पन्न करना था कि टिकाऊ विकास की चर्चाओ को धरातल पर ठोस रुप में परिणित करने का यही एक मात्र तरीका है। यह बदलाव हमें समस्त जीवो के अस्तित्व का सम्मान और पृथ्वी के सभी संसाधनों को संरक्षित करने के लिए प्रेरित करता है।

इस विषय का परिचय देते हुए भारत सोका गाक्काई के अध्यक्ष विशेष गुप्ता ने "कहा स्थिरता की मूल परिभाषा का अर्थ है-भविष्य की पीढीयों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किये बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करना" इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि हम व्यक्तिगत तौर पर, सामाजिक दृष्टि से तथा मानव सभ्यता के रुप में अपने अस्तित्व के तौर-तरीके का मौलिक पुर्नमूल्यांकन करे| इसके लिए हमें अपने दैनिक जीवन व्यवहार में इसे जीवन शैली के रुप में अपनाना होगा।

इस संगोष्ठी में प्रसिद्ध वक्ता जैसे डॉ० विभा धवन, महानिदेशक, द एनर्जी एंड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट; डॉ. राधिका बत्रा, सह-संस्थापक और अध्यक्ष,एव्री इंफेंट मैटर्स; श्री अंशु तनेजा, प्रबंध निदेशक और बोर्ड सदस्य, विज़नस्प्रिंग, भारत; और श्री गौरव शाह, सह-संस्थापक और निदेशक, इंडियन स्कूल ऑफ डेवलपमेंट मैनेजमेंट ने भाग लिया।

वक्ताओं ने विषय पर अपनी विशेषज्ञता और दृष्टिकोण साझा किए और स्थिरता की संस्कृति बनाने के लिए सामूहिक कार्रवाई की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति द्वारा अपनी जीवन शैली में बदलाव लाने के महत्व पर प्रकाश डाला।

इस संगोष्ठी की मुख्य वक्ता डॉ० विभा धवन ने कहा: "अधिकांश विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए स्थायी जीवन शैली को अपनाने की अनिवार्यता इतनी महत्वपूर्ण कभी नहीं थी। 2030 के विकास के एजंडे को प्राप्त करने के लिए हमें वैश्विक संवाद द्वारा ऐसी शैलियों को पहचानने, एकीकृत करने और उन्हें मुख्यधारा में लाने की आवश्यकता है।"

श्री गौरव शाह ने अपने वक्तव्य में कहा, "आज , हम पृथ्वी पर उपलब्ध प्राक्रतिक संसाधनों का अंधाधुंध उपयोग करके उन्हें लगातार कम करते जा रहे हैं। हमें अपनी जीवन शैली में आवश्यक परिवर्तन लाने चाहिये ताकि हमारी अगामी पीढ़ी को भी वही अवसर और अधिकार मिल सकें,जो हमें हमारे पूर्वजो से विरासत में मिले थे ।"

डॉ. राधिका बत्रा ने प्रकृति के उपहारों का उपयोग करने पर बल दिया । उन्होंने कहा " प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का एक मिशन होता है और उसे प्राप्त करने का माध्यम भी अलग होता है । लेकिन हम सब में एक चीज़ समान होनी चाहिये और वह है, सूर्य, हवा, बारिश जैसे प्राक्रतिक उपहारों का उपयोग करते समय यह संकल्प की हम धरती माता को संरक्षित रखेंगे तथा उसे कभी हानी नही पहुंचायेंगे"

श्री अंशु तनेजा ने स्थायी मानव व्यवहार को केवल सामाजिक प्रभाव पैदा करने के साधन के बजाय स्वार्थ के लेंस से देखने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि यदि हम अपने तौर-तरीके नहीं बदलते हैं तथा बड़े कदम नही उठाते है, तो हम अपने जीवन की गुणवत्ता को गंभीर रूप से प्रभावित करने का जोखिम उठा रहे हैं और अगली पीढ़ी के लिए एक अस्तित्वगत खतरा पीछे छोड़कर जा रहे हैं। उन्होंने कहा, "हमारा यह ग्रह अपने आप को बचाने में सक्षम है, आवश्यकता है हमें खुद को बचाने की"

वक्ताओं के गहन विचारों और चर्चाओं ने एक सार्थक संवाद को जन्म दिया,जिसने क्षोताओं को स्थायी जीवन शैलियों को अपनाने और ग्रह पर सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए प्रेरित किया। यह आयोजन लोगों की मानसिकता और व्यवहार में बदलाव को उजागर करके एक स्थायी भविष्य के लिए जागरूकता पैदा करने और इस दिशा में काम करने को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था।

भारत सोका गाक्काई ने इस अवसर पर एक कार्बन फुटप्रिंट कैलकुलेटर भी लॉन्च किया, जो लोगों को पर्यावरण पर उनके द्वारा डाले जा रहे प्रभाव को मापने में सहायता देगा। इसे 'गूगल प्ले स्टोर' या 'एप्पल ऐप स्टोर' से "बी एस जी फॉर एस डी जी " नामक मोबाइल ऐप के रूप में डाउनलोड किया जा सकता है।

बी एस जी ने 'सीड्स ऑफ़ होप एंड एक्शन: मेकिंग द एस डी जी ए रियलिटी' नामक शीर्षक से एक सस्टेनेबिलिटी प्रदर्शनी भी लॉन्च की।इस प्रदर्शनी में एक अधिक टिकाऊ विश्व के सृजन तथा एक व्यक्ति की क्षमता की भूमिका तथा स्थायी एवं सतत मानव व्यवहार को अपनाने के प्रभाव को दर्शाया गया है।

बी० एस० जी० की अधिक जानकारी के लिए कृपया देखें:

https://www.bharatsokagakkai.org

2030 के लिए टिकाऊ एवं स्थिर जीवन शैली अनिवार्य

CALENDAR

April 2023

M	T	W	T	F	S
					1
3	4	5	6	7	8
10	11	12	13	14	1
17	18	19	20	21	2
24	25	26	27	28	2

« Mar

LATEST NEWS

कैरियर

हिमाचल

आउटसो पर...

APR 27, 2023 SHRIKHAN TIMES

शिक्षा/कैरियर

हिमाचल

सुप्रीम क पीटीए...

APR 27, SHRIKH TIMES

आगजनी

शिमला

भारत सोका गाक्काई (बीएसजी) सभी के लिए खुशी और शांति के मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए समर्पित एक संस्था है। बीएसजी शांति ,संस्कृति,शिक्षा और सतत एवं स्थायी विकास से सम्बंधित विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करता है। इन गतिविधियों का उद्देश्य है, ' व्यक्ति सशक्तिकरण' द्वारा भारत में एक 'नये युग' का निर्माण करना ,जहाँ सभी प्रकार के जीवन की गरिमा को सम्मान मिले। बीएसजी में सभी आयु वर्ग के 275000 से अधिक स्वैछिक सदस्य है , जो भारत के 600 कस्बों और शहरों में रहते है। 2030 तक एक स्थायी युग का निर्माण करने के लिए, बी एस जी ने 2021 में ' एस डी जी के लिए बी एस जी ' पहल की शुरुआत की, जिसका आदर्श वाक्य है: '2030 की ओर: सतत एवं स्थायी मानव व्यवहार के माध्यम से एस डी जी को प्राप्त करना।इस पहल के तहत बी एस जी कई गतिविधियों को चला रहा है। इन गतिविधियों द्वारा बी एस जी स्थिरता की संस्कृति के निर्माण में आम आदमी की भूमिका के प्रति जागरूकता फ़ैलाने का काम करके एक ऐसे विश्व का निर्माण कर रहा है जिसमे कोई भी पीछे न छुट जाये।

« शिमला में 01 से 04 जून तक होगा अंतर्राष्ट्रीय शिमला ग्रीष्मोत्सव 2023 – आदित्य नेगी

बिना साक्षात्कार शैक्षणिक योग्यता पर भर्ती होंगे हजारों अस्थायी शिक्षक, नई नीति बनाने की तैयारी »

By shrikhand times

RELATED POST

विशेष शिमला

शिमला में 01 से 04 जून तक हो...

APR 26, 2023 SHRIKHAND TIMES

विशेष शिक्षा/कैरियर हिमाचल

बिना साक्षात्कार शैक्षणिक योग्य...

APR 25, 2023 SHRIKHAND TIMES

विशेष हिमाचल

एसजेवीएन लिमिटेड द्वारा...

APR 25, 2023 SHRIKHAND TIMES

Leave a Reply

Enter your comment here...

YOU MISSED

कैरियर हिमाचल

आउटसोर्स पर कर्मचारियों को रखने वाली कंपनियों के खिलाफ विजिलेंस की जांच शुरू

शिक्षा/कैरियर हिमाचल

सुप्रीम कोर्ट से प्रोटीए शिक्षकों को बड़ी राहत, 1 अप्रैल, 2018 से मिलेगा नियमितीकरण ...

शिमला IGMC...

APR 27, 2023 SHRIKHAN TIMES

क्राइम हिमाचल

JOA (IT)...

APR 26, 2023 SHRIKHAN TIMES

शिक्षा/कैरियर हिमाचल

धर्मशाल में JBT...

APR 26, 2023 SHRIKHAN TIMES

'Sustainable Lifestyle is imperative towards 2030', says TERI head Dhawan at Bharat Soka Gakkai Sustainability conclave

freepressjournal.in/lifestyle/sustainable-lifestyle-is-imperative-towards-2030-says-teri-head-dhawan-at-bharat-soka-gakkai-sustainability-conclave

April 27, 2023

Bharat Soka Gakkai Sustainability Conclave | FPJ

New Delhi: The need for sustainable living has never been more critical than it is now. With rising temperatures, heatwaves, plastic and air pollution, and various other problems emerging in the world, it is time to think about what role each one of us can play in preserving this one precious blue planet, Earth.

Bharat Soka Gakkai, an organization promoting peace, culture, education and sustainability across Indian society, organised a 'Sustainability Conclave' on April 26, 2023, to discuss the issue at hand. The conclave, held at the Chinmaya Mission Auditorium in New Delhi, brought together thought leaders, experts, and sustainability enthusiasts to explore the challenges and opportunities for creating a sustainable future.

Theme of the event

The theme of the conclave was '*Goals to Action: Through Sustainable Human Behaviour*.' The event aimed to raise awareness about the urgent need for sustainable human behavior – a term coined by Bharat Soka Gakkai, and how this is the only way to drive all people to turn conversations on sustainability into action for sustainability.

Sustainable human behaviour is a tangible shift in the mindset and lifestyle of people—in the way they think about other people and the resources of this Earth—and how they conduct themselves in their everyday lives with mindfulness to respect all life and preserve all resources.

Introducing this theme, the Chairperson of Bharat Soka Gakkai, Vishesh Gupta said, “The basic definition of sustainability refers to "meeting the needs of the present generation without compromising the ability of future generations to meet their own needs. To achieve this goal, a fundamental reassessment of our way of existence as individuals, as societies, and as a human civilization is required. Towards that end, we must take concrete action in our everyday life. And for this purpose, adopting sustainable human behaviour as a way of life will be crucial.”

Panel discusssion

The conclave included a panel discussion had renowned speakers such as Dr. Vibha Dhawan, Director General, The Energy and Resources Institute; Dr. Radhika Batra, Co-Founder and President, Every Infant Matters; Anshu Taneja, Managing Director and Board Member, VisionSpring, India; and Gaurav Shah, Co-Founder and Director, Indian School of Development Management.

The panelists shared their expertise and perspectives on the theme and emphasized the need for collective action to create a culture of sustainability. They highlighted the importance of each person bringing a change in their own lifestyle.

Dr Vibha Dhawan, who was also the keynote speaker in the conclave, said,“The imperative of adopting sustainable lifestyles to achieve most of the development targets had never been so critical in the past and global discourse needs to recognize, integrate and mainstream them for achieving the 2030 development agenda.”

Gaurav Shah, in his statement, said, "Right now, we are eating into not just the "interest”, but the "principal" of the natural resources provided by planet earth, thereby depleting those resources. We need to live lives in a manner that gives our children the right and opportunity to lead the lives we lead."

Dr. Radhika Batra emphasized the importance of utilizing the bounties of nature in all our endeavors. She said, ″Each one of us has a different mission in life, a different path to follow. But there is one thing that must be common: an attempt to utilize the bounties of nature, the sun and the wind and the rain, in all our endeavors, and a pledge to preserve Mother Earth and save her from harm."

Anshu Taneja highlighted the need to view sustainable human behavior through the lens of self-interest rather than just as a means of creating social impact. He warned that if we do not mend our ways and act now and act big, we severely risk affecting the quality of our lives and leave behind an existential threat for the next generation. He said, ″Our planet is competent in saving itself; it's ourselves that we need to save."

BSG Ventures for Sustainability

Bharat Soka Gakkai also launched a carbon footprint calculator on the occasion to give individuals a concrete means to measure the impact they are having on the environment. It can be downloaded as a mobile app called “BSG for SDG” from the Google Play Store or Apple App Store.

BSG also put up a sustainability exhibition titled ‘Seeds of Hope & Action: Making the SDGs a Reality’, which speaks about the “Power of One” to create a more sustainable world, and about adopting sustainable human behaviour as a way of life.

Read Also

POSH Conclave organises conference 'No Means No' a Centre for Skill Development & Training...

ભારત સોકા ગક્કાઈ સસ્ટેનબિલિટી કોન્ક્લેવ

સસ્ટેનેબલ માનવ વર્તનથીઃ લક્ષ્યોથી ક્રિયાઓના પરિણામો મેળવવા BSG કોન્ક્લેવમાં TERIના વડા ધવન કહે છે કે "સસ્ટેનેબલ લાઇફસ્ટાઇલ ૨૦૩૦ માટે હિતાવહ છે".

નવી દિલ્હી, ભારતઃ સસ્ટેનેબલ જીવનશૈલીની જરૂર હવે હવે અત્યંત મહત્વની બની ગઈ છે. વિશ્વમાં વધતા તાપમાન, હીટવેવ્સ, પ્લાસ્ટિક અને વાયુ પ્રદૂષણ અને અન્ય વિવિધ સમસ્યાઓ સાથે, અમૂલ્ય પૃથ્વીને બચાવવા માટે દરેક વ્યક્તિ શું ભૂમિકા ભજવી શકે છે તે વિશે વિચારવાનો સમય આવી ગયો છે. સમગ્ર ભારતીય સમાજમાં શાંતિ, સંસ્કૃતિ, શિક્ષણ અને સસ્ટેનેબિલિટીને પ્રોત્સાહન આપતી સંસ્થા, ભારત સોકા ગક્કાઈએ ૨૯ એપ્રિલ, ૨૦૨૩ના રોજ એક સસ્ટેનેબિલિટી કોન્ક્લેવનું આયોજન કર્યું હતું, જેમાં આ મુદ્દા પર ચર્ચા કરવામાં આવી હતી. નવી દિલ્હીમાં ચિન્મય મિશન ઓડિટોરિયમ ખાતે યોજાયેલ કોન્ક્લેવ, એક ટકાઉ ભાવિ બનાવવા માટેના પડકારો અને તકોની શોધ કરવા માટે વિચારશીલ નેતાઓ, નિષ્ણાતો અને ટકાઉપણાના ઉત્સાહીઓને સાથે લાવી હતી. કોન્ક્લેવની થીમ 'ગોલ્સ ટુ એક્શનઃ થ્રુ સસ્ટેનેબલ હ્યુમન બિહેવિયર' હતી. આ ઇવેન્ટનો ઉદ્દેશ્ય ટકાઉ માનવીય વર્તણૂકની તાકીદની જરૂરિયાત વિશે જાગૃતિ લાવવાનો હતો - સસ્ટેનેબલ માનવીય વર્તણૂક આ એક શબ્દ ભારત સોકા ગક્કાઈ દ્વારા બનાવવામાં આવ્યો હતો, જે દર્શાવે છે કે આપણે કેવી રીતે સસ્ટેનેબિલિટીની વાતને સ્થિરતાથી વાતચીતમાં ફેરવવી જોઈએ છે. સસ્ટેનેબલ માનવ વર્તણૂક એ લોકોની માનસિકતા અને જીવનશૈલીમાં એક મૂર્ત પરિવર્તન છે - જેમાં લોકો પોતાના અને આ પૃથ્વીના સંસાધનો વિશે જુદી રીતે વિચારે અને તમામ સંસાધનોને સાચવે. તેઓ તેમના રોજિંદા જીવનમાં પોતાની સાથે કેવી માઇન્ડફુલનેસ સાથે વર્તે છે અને તમામ જીવનનો આદર કરે છે તે જોવાય છે. આ થીમનો પરિચય આપતા, ભારત સોકા ગક્કાઈના અધ્યક્ષ, શ્રી વિશેષ ગુપ્તાએ કહ્યું "સસ્ટેનેબિલિટીની મૂળભૂત વ્યાખ્યા 'ભવિષ્યની પેઢીઓની પોતાની જરૂરિયાતો પૂરી કરવાની ક્ષમતા સાથે સમાધાન કર્યા વિના વર્તમાન પેઢીની જરૂરિયાતોને સંતોષવા' નો ઉલ્લેખ કરે છે. આ ધ્યેય હાંસલ કરવા માટે, વ્યક્તિ તરીકે, સમાજ તરીકે અને માનવ સભ્યતા તરીકે આપણા અસ્તિત્વની રીતનું મૂળભૂત પુનર્મૂલ્યાંકન જરૂરી છે. તે માટે, આપણે આપણા રોજિંદા જીવનમાં નક્કર પગલાં લેવા જોઈએ. અને આ હેતુ માટે, જીવનના માર્ગ તરીકે સસ્ટેનેબલ માનવ વર્તન અપનાવવું નિર્ણાયક બનશે.

કોન્ક્લેવમાં પેનલ ચર્ચામાં જાણીતા વક્તા જેમ કે ડૉ. વિભા ધવન, ડિરેક્ટર જનરલ, ધ એનર્જી એન્ડ રિસોર્સિસ ઇન્સ્ટિટ્યૂટ; ડૉ. રાધિકા બત્રા, સહ-સ્થાપક અને પ્રમુખ, એવરી ઇન્ફન્ટ મેટર્સ; શ્રી અંશુ તનેજા, મેનેજિંગ ડિરેક્ટર અને બોર્ડ મેમ્બર, વિઝનબિલ્ડિંગ, ભારત; અને શ્રી ગૌરવ શાહ, સહ-સ્થાપક અને નિયામક, ઇન્ડિયન સ્કૂલ ઓફ ડેવલપમેન્ટ મેનેજમેન્ટ નો સમાવેશ થતો હતો. પેનલના સભ્યોએ વિષય પર તેમની કુશળતા અને દ્રષ્ટિકોણ શેર કર્યા અને સસ્ટેનેબિલિટીની સંસ્કૃતિ બનાવવા માટે સામૂહિક પગલાંની જરૂરિયાત પર ભાર મૂક્યો. તેઓએ દરેક વ્યક્તિની પોતાની જીવનશૈલીમાં પરિવર્તન લાવવાના મહત્વ પર પ્રકાશ પાડ્યો. ડૉ. વિભા ધવને, જેઓ કોન્ક્લેવમાં મુખ્ય વક્તા પણ હતા, તેમણે કહ્યું "હીથી વધુ વિકાસ લક્ષ્યો પૂરા કરવા માટે સસ્ટેનેબલ જીવનશૈલીઓ અપનાવવાની અગત્યતા પહેલાં નથી થઈ અને વિશ્વ વાર્તાઓમાં તેને ચાલુ કરવાની જરૂર છે જે ૨૦૩૦ વિકાસ એજેન્ડા પૂર્ણ કરવામાં મદદ કરશે." શ્રી ગૌરવ શાહે તેમના નિવેદનમાં જણાવ્યું હતું કે, "અત્યારે, આપણે માત્ર 'વ્યાજ' જ નહીં, પરંતુ પૃથ્વી ગ્રહ દ્વારા પૂરા પાડવામાં આવેલ કુદરતી સંસાધનોના 'મુદ્દલ'ને વાપરી રહ્યા છીએ, જેનાથી તે સંસાધનોનો નાશ થઈ રહ્યો છે. આપણે જીવન એવી રીતે જીવવાની જરૂર છે કે જે આપણા બાળકોને આપણે જે જીવન જીવીએ છીએ તે જીવવાનો અધિકાર અને તક મળે." ડૉ. રાધિકા બત્રાએ આપણા તમામ પ્રયાસોમાં કુદરતની કૃપાનો ઉપયોગ કરવાના મહત્વ પર ભાર મૂક્યો હતો. તેણીએ કહ્યું, "આપણા દરેકના જીવનનો એક અલગ હેતુ છે, તેને હાંસલ કરવા માટેનો એક અલગ રસ્તો છે. પરંતુ એક વાત દરેક વ્યક્તિ સાથે જોડાયેલી છે એ છેઃ કુદરતની કૃપા, સૂર્ય અને પવન અને વરસાદનો ઉપયોગ કરવાનો પ્રયાસ. આપણા તમામ પ્રયાસો, પૃથ્વી માતાને બચાવવા અને તેને નુકસાનથી બચાવવાની પ્રતિજ્ઞા સમાન હોવા જોઈએ." શ્રી અંશુ તનેજાએ માત્ર સામાજિક પ્રભાવ પેદા કરવાના સાધનને બદલે સ્વ-હિતના કારણથી ટકાઉ માનવ વર્તન જોવાની જરૂરિયાત પર પ્રકાશ પાડ્યો. તેમણે ચેતવણી આપી હતી કે જો આપણે આપણી રીતો સુધારીશું નહીં અને હજુ મોટા કામ કરીશું, તો આપણે આપણા જીવનની ગુણવત્તાને ગંભીર રીતે અસર કરવાનું જોખમ લઈશું અને આવનારી પેઢીના અસ્તિત્વને જોખમમાં નાખીશું. તેણે કહ્યું, "આપણો ગ્રહ પોતાને બચાવવા માટે સક્ષમ છે; આપણે આપણી જાતને બચાવવાની જરૂર છે." લોકોને ટકાઉ પ્રથાઓ અપનાવવા અને ગ્રહ પર હકારાત્મક અસર કરવા પ્રેરણા તથા વિચારોને વેગ આપે તેવી રીતે વક્તાઓએ આંતરદૃષ્ટિ અને ચર્ચાઓએ અર્થપૂર્ણ સંવાદ લાવ્યો. લોકોની માનસિકતા અને વર્તનમાં ફેરફાર કરીને ટકાઉ ભવિષ્ય માટે જાગૃતિ લાવવા અને પ્રોત્સાહન આપવા માટે આ ઇવેન્ટ એક મહત્વપૂર્ણ પગલું હતું. સસ્ટેનેબિલિટી કોન્ક્લેવ એ હાલના સમયની પહેલ હતી અને કોન્ક્લેવમાં થયેલ ચર્ચાઓ અને વિચારો આવનારી પેઢીઓ માટે ટકાઉ અને સુરક્ષિત ભવિષ્ય બનાવવામાં મદદ કરશે. ભારત સોકા ગક્કાઈએ આ પ્રસંગે કાર્બન ફૂટપ્રિન્ટ કેલ્ક્યુલેટર પણ લોન્ચ કર્યું હતું જેથી વ્યક્તિઓ પર્યાવરણ પર શું અસર કરે છે તેનું માપન કરી શકે. તેને Google Play Store અથવા Apple App Store પરથી "BSC for SDG" નામની મોબાઇલ એપ્લિકેશન તરીકે ડાઉનલોડ કરી શકાય છે BSGએ 'Seeds of Hope & Action: Making the SDGs a Reality' નામનું એક સસ્ટેનબિલિટી પ્રદર્શન પણ શરૂ કર્યું, જીવનના માર્ગ તરીકે સસ્ટેનેબલ માનવ વર્તન અપનાવવા વિશે અને વધુ ટકાઉ વિશ્વ બનાવવા માટે "પાવર ઓફ વન" વિશે વાત કરે છે. ભારત સોકા ગક્કાઈ (BSG) એ બધા માટે સુખ અને શાંતિના મૂલ્યોને પ્રોત્સાહન આપવા માટે સમર્પિત સંસ્થા છે. BSG શાંતિ, સંસ્કૃતિ, શિક્ષણ અને સસ્ટેનબિલિટીના છત્ર હેઠળ વિવિધ પ્રવૃત્તિઓનું આયોજન કરે છે અને 'વ્યક્તિઓના સશક્તિકરણ' પર ધ્યાન કેન્દ્રિત કરે છે અને 'ભારતમાં નવા યુગ'નું નિર્માણ કરે છે જ્યાં તમામ જીવનની પ્રતિષ્ઠાનો આદર કરવામાં આવે છે. BSGમાં ૨૭૫,૦૦૦ થી વધુ સ્વૈચ્છિક સભ્યો છે જેઓ ભારતના ૯૦૦ નગરો અને શહેરોમાં ફેલાયેલા છે અને તમામ વય જૂથોના છે. ૨૦૩૦ સુધીમાં સસ્ટેનેબલ યુગ બનાવવા માટે, BSG એ ૨૦૨૧ માં 'જાગૃત માટે BSG' પહેલ શરૂ કરી, જેનું સૂત્ર છેઃ '૨૦૩૦ તરફઃ સસ્ટેનેબલ માનવ વર્તણૂક દ્વારા સહઅસ્તિત્વ હાંસલ કરવી.' આ પહેલ હેઠળ, BSG સસ્ટેનબિલિટીની સંસ્કૃતિના નિર્માણમાં સામાન્ય વ્યક્તિઓની ભૂમિકા અંગે વધુ જાગૃતિ ફેલાવવા અને જ્યાં કોઈ જીવન પાછળ ન રહે એવી એક દુનિયાનું નિર્માણ કરવા માટે ઘણી પ્રવૃત્તિઓ હાથ ધરી રહી છે.

ભારત સોકા ગક્કાઈ સસ્ટેનબિલિટી કૉક્લેવનું આયોજન કરાયુ

BSG કોક્લેવમાં TERI ના વડા પવન કહે છે કે "સસ્ટેનેબલ લાઈફસ્ટાઈલ ૨૦૩૦ માટે હિતાવહ છે".

નવી દિલ્હી : સસ્ટેનેબલ જીવનશૈલીની જરૂર હવે હવે અત્યંત મહત્વની બની ગઈ છે. વિશ્વમાં વધતા તાપમાન, હીટવેવ્સ, પ્લાસ્ટિક અને વાયુ પ્રદૂષણ અને અન્ય વિવિધ સમસ્યાઓ સાથે, અમૂલ્ય પૃથ્વીને બચાવવા માટે દરેક વ્યક્તિ શું ભૂમિકા ભજવી શકે છે તે વિશે વિચારવાનો સમય આવી ગયો છે. સમગ્ર ભારતીય સમાજમાં

અનું. પાનાનું-૩ ઉપર

અનું. પહેલા પાનાનું ચાલુ

ભારત સોકા ગક્કાઈ સસ્ટેનબિલિટી કૉક્લેવનું આયોજન કરાયુ

શાંતિ, સંસ્કૃતિ, શિક્ષણ અને સસ્ટેનેબિલિટીને પ્રોત્સાહન આપતી સંસ્થા, ભારત સોકા ગક્કાઈએ ૨૯ એપ્રિલ, ૨૦૨૩ના રોજ એક સસ્ટેનેબિલિટી કોક્લેવનું આયોજન કર્યુ હતું, જેમાં આ મુદ્દા પર ચર્ચા કરવામાં આવી હતી. નવી દિલ્હીમાં ચિન્મય મિશન ઓડિટોરિયમ ખાતે યોજાયેલ કોક્લેવ, એક ટકાઉ ભાવિ બનાવવા માટેના પડકારો અને તકોની શોધ કરવા માટે વિચારશીલ નેતાઓ, નિષ્ણાતો અને ટકાઉપણાના ઉત્સાહીઓને સાથે લાવી હતી.

કોક્લેવની થીમ 'ગોલ્સ ટુ એક્શનઃ ધ્રુ સસ્ટેનેબલ હ્યુમન બિહેવિયર' હતી. આ ઈવેન્ટનો ઉદ્દેશ્ય ટકાઉ માનવીય વર્તણૂકની તાકીદની જરૂરિયાત વિશે જાગૃતિ લાવવાનો હતો - સસ્ટેનેબલ માનવીય વર્તણૂક આ એક શબ્દ ભારત સોકા ગક્કાઈ દ્વારા બનાવવામાં આવ્યો હતો, જે દર્શાવે છે કે આપણે કેવી રીતે સસ્ટેનેબિલિટીની વાતને સ્થિરતાથી વાતચીત માં ફેરવવી શકીયે છે. સસ્ટેનેબલ માનવ વર્તણૂક એ લોકોની માનસિકતા અને જીવનશૈલીમાં એક મૂર્ત પરિવર્તન છે - જેમાં લોકો પોતાના અને આ પૃથ્વીના સંસાધનો વિશે જુદી રીતે વિચારે અને તમામ સંસાધનોને સાચવે. તેઓ તેમના રોજિંદા જીવનમાં પોતાની સાથે કેવી માઈન્ડફુલનેસ સાથે વર્તે છે અને તમામ જીવનનો આદર કરે છે તે જોવાય છે.

આ થીમનો પરિચય આપતા, ભારત સોકા ગક્કાઈના અધ્યક્ષ, શ્રી વિશેષ ગુપ્તાએ કહ્યું: " સસ્ટેનેબિલિટીની મૂળભૂત વ્યાખ્યા "ભવિષ્યની પેઢીઓની પોતાની જરૂરિયાતો પૂરી કરવાની ક્ષમતા સાથે સમાધાન કર્યા વિના વર્તમાન પેઢીની જરૂરિયાતોને સંતોષવા" નો ઉલ્લેખ કરે છે. આ ધ્યેય હાંસલ કરવા માટે, વ્યક્તિ તરીકે, સમાજ તરીકે અને માનવ સભ્યતા તરીકે આપણા અસ્તિત્વની રીતનું મૂળભૂત પુનઃમૂલ્યાંકન જરૂરી છે. તે માટે, આપણે આપણા રોજિંદા જીવનમાં નક્કર પગલાં લેવા જોઈએ. અને આ હેતુ માટે, જીવનના માર્ગ તરીકે સસ્ટેનેબલ માનવ વર્તન અપનાવવું નિર્ણાયક બનશે.

કોક્લેવમાં પેનલ ચર્ચામાં જાણીતા વક્તા જેમ કે ડો. વિભા ધવન, ડિરેક્ટર જનરલ, ધ એનર્જી એન્ડ રિસોર્સિસ ઈન્સ્ટિટ્યૂટ; ડો. રાધિકા બત્રા, સહ-સ્થાપક અને પ્રમુખ, એવેરી ઈન્ફન્ટ મેટર્સ; શ્રી અંશુ તનેજા, મેનેજિંગ ડિરેક્ટર અને બોર્ડ મેમ્બર, વિઝનસ્પ્રિંગ, ભારત; અને શ્રી ગૌરવ શાહ, સહ-સ્થાપક અને નિયામક, ઈન્ડિયન સ્કૂલ ઓફ ડેવલપમેન્ટ મેનેજમેન્ટ નો સમાવેશ થતો હતો.

પેનલના સભ્યોએ વિષય પર તેમની કુશળતા અને દ્રષ્ટિકોણ શેર કર્યા અને સસ્ટેનેબિલિટીની સંસ્કૃતિ બનાવવા માટે સામૂહિક પગલાંની જરૂરિયાત પર ભાર મૂક્યો. તેઓએ દરેક વ્યક્તિની પોતાની જીવનશૈલીમાં પરિવર્તન લાવવાના મહત્વ પર પ્રકાશ પાડ્યો.

ડો. વિભા ધવને, જેઓ કોક્લેવમાં મુખ્ય વક્તા પણ હતા, તેમણે કહ્યું "સૌથી વધુ વિકાસ લક્ષ્યો પૂરા કરવા માટે સસ્ટેનેબલ જીવનશૈલીઓ અપનાવવાની અગત્યતા પહેલાં નથી થઈ અને વિશ્વ વાર્તાઓમાં તેને ચાલુ કરવાની જરૂર છે જે ૨૦૩૦ વિકાસ એજેન્ડા પૂર્ણ કરવામાં મદદ કરશે."

શ્રી ગૌરવ શાહે તેમના નિવેદનમાં જણાવ્યું હતું કે, "અત્યારે, આપણે માત્ર "વ્યાજ" જ નહીં, પરંતુ પૃથ્વી ગ્રહ દ્વારા પૂરા પાડવામાં આવેલ કુદરતી સંસાધનોના "મુદ્દલ"ને વાપરી રહ્યા છીએ, જેનાથી તે સંસાધનોનો નાશ થઈ રહ્યો છે. આપણે જીવન એવી રીતે જીવવાની જરૂર છે કે જે આપણા બાળકોને આપણે જે જીવન જીવીએ છીએ તે જીવવાનો અધિકાર અને તક મળે."

ડો. રાધિકા બત્રાએ આપણા તમામ પ્રયાસોમાં કુદરતની કૃપાનો ઉપયોગ કરવાના મહત્વ પર ભાર મૂક્યો હતો. તેણીએ કહ્યું, "આપણા દરેકના જીવનનો એક અલગ હેતુ છે, તેને હાંસલ કરવા માટેનો એક અલગ રસ્તો છે. પરંતુ એક વાત દરેક વ્યક્તિ સાથે જોડાયેલી છે એ છેઃ કુદરતની કૃપા, સૂર્ય અને પવન અને વરસાદનો ઉપયોગ કરવાનો પ્રયાસ. આપણા તમામ પ્રયાસો, પૃથ્વી માતાને બચાવવા અને તેને નુકસાનથી બચાવવાની પ્રતિજ્ઞા સમાન હોવો જોઈએ."

શ્રી અંશુ તનેજાએ માત્ર સામાજિક પ્રભાવ પેદા કરવાના સાધનને બદલે સ્વ-હિતના કાર્યથી ટકાઉ માનવ વર્તન જોવાની જરૂરિયાત પર પ્રકાશ પાડ્યો. તેમણે ચેતવણી આપી હતી કે જો આપણે આપણી રીતો સુધારીશું નહીં અને હજુ મોટા કામ કરીશું, તો આપણે આપણા જીવનની ગુણવત્તાને ગંભીર રીતે અસર કરવાનું જોખમ લઈશું અને આવનારી પેઢીના અસ્તિત્વને જોખમમાં નાખીશું. તેણે કહ્યું, "આપણો ગ્રહ પોતાને બચાવવા માટે સક્ષમ છે; આપણે આપણી જાતને બચાવવાની જરૂર છે."

લોકોને ટકાઉ પ્રથાઓ અપનાવવા અને ગ્રહ પર હકારાત્મક અસર કરવા પ્રેરણા તથા વિચારોને વેગ આપે તેવી રીતે વક્તાઓએ આંતરદૃષ્ટિ અને ચર્ચાઓએ અર્થપૂર્ણ સંવાદ સાધ્યો. લોકોની માનસિકતા અને વર્તનમાં ફેરફાર કરીને ટકાઉ ભવિષ્ય માટે જાગૃતિ લાવવા અને પ્રોત્સાહન આપવા માટે આ ઈવેન્ટ એક મહત્વપૂર્ણ પગલું હતું.

સસ્ટેનેબિલિટી કોક્લેવ એ હાલના સમયની પહેલ હતી અને કોક્લેવમાં થયેલ ચર્ચાઓ અને વિચારો આવનારી પેઢીઓ માટે ટકાઉ અને સુરક્ષિત ભવિષ્ય બનાવવામાં મદદ કરશે.

ભારત સોકા ગક્કાઈએ આ પ્રસંગે કાર્બન ફૂટપ્રિન્ટ કેલ્ક્યુલેટર પણ લોન્ચ કર્યુ હતું જેથી વ્યક્તિઓ પર્યાવરણ પર શું અસર કરે છે તેનું માપન કરી શકે. તેને **Google Play Store** અથવા **Apple App Store** પરથી **"BSG for SDG"** નામની મોબાઈલ એપ્લિકેશન તરીકે ડાઉનલોડ કરી શકાય છે

BSGyu 'Seeds of Hope & Action: Making the SDGs a Reality' નામનું એક સસ્ટેનબિલિટી પ્રદર્શન પણ શરૂ કર્યું, જીવનના માર્ગ તરીકે સસ્ટેનેબલ માનવ વર્તન અપનાવવા વિશે અને વધુ ટકાઉ વિશ્વ બનાવવા માટે "પાવર ઓફ વન" વિશે વાત કરે છે.

ભારત સોકા ગક્કાઈ **(BSG)** એ બધા માટે સુખ અને શાંતિના મૂલ્યોને પ્રોત્સાહન આપવા માટે સમર્પિત સંસ્થા છે. **BSG** શાંતિ, સંસ્કૃતિ, શિક્ષણ અને સસ્ટેનબિલિટીના છત્ર હેઠળ વિવિધ પ્રવૃત્તિઓનું આયોજન કરે છે